संस्कृत शिक्षण विधियाँ

• मौखिक-लिखितप्रश्नानां प्रकाराः

अधिक उन्नत PDF एवं समर्पित कोर्स के लिए –

SKY EDUCARE ऐप डाउनलोड करें / Download Mobile App
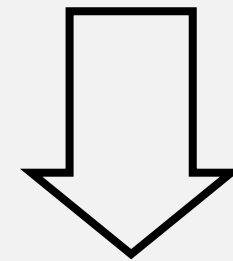
Download

मूल्यांकन की प्रविधियाँ

विद्यालयों में प्रयुक्त की जाने वाली सभी मूल्यांकन प्रविधियों को प्रमुख रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जाता है -

1. परिमाणात्मक प्रविधियाँ

1. मौखिक परीक्षा
2. लिखित परीक्षा
3. प्रायोगिक परीक्षा

1. वस्तुनिष्ठ 2. निबंधात्मक

2. गुणात्मक प्रविधियाँ

1. जाँच की सूची और स्तर माप
2. अवलोकन या निरीक्षण
3. घटनावृत्त
4. साक्षात्कार

1. परिमाणात्मक प्रविधियाँ

- मूल्यांकन में इस प्रकार की प्रविधियाँ अधिक उपयोगी, विश्वसनीय तथा वैध होती है। ये तीन प्रकार की होती है ।

1. मौखिक परीक्षा
2. लिखित परीक्षा
3. प्रायोगिक परीक्षा

मौखिक परीक्षा

Sky Educare

- छात्र के ज्ञान के मूल्यांकन की यह विधि मुख्यतः व्यक्तिगत होती मतलब छात्र को अकेले बुलाकर उससे प्रश्न पूंछे जाते हैं। यह मूल्यांकन की **प्राचीन** और **परंपरागत** विधि है।

- **इसमें छात्र से मौखिक रूप से प्रश्न करके उसके ज्ञान, अभिव्यक्ति की क्षमता और उसके आत्मविश्वास को परखा जाता है।**

- मौखिक प्रश्न पूछते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए-

1. लम्बे उत्तरों वाले प्रश्नों को नहीं पूछना चाहिए
2. प्रश्न में द्विअर्थी शब्दों का प्रयोग करने से बचना चाहिए
3. छात्रों को उत्तर देते समय, बीच में नहीं टोकना चाहिए
4. लम्बी शब्दावली वाले प्रश्नों से बचना चाहिए

मौखिक परीक्षा के भेद -

1. **शलाका परीक्षा** – *इसमें परीक्षण करता शलाका की सहायता से किसी पृष्ठ से प्रश्न या पंक्ति को पूछता है , छात्र मौखिक ही तुरंत उत्तर प्रदान करता है। इसका उद्देश्य छात्र की चिंतन मनन शक्ति का विकास समरण शक्ति का विकास एकाग्रता स्थापना हेतु किया जाता है।*

2. **शास्त्रार्थ** - ***किसी विषय पर तर्क वितर्क करके निर्णय करना शास्त्रार्थ है। प्राचीन समय में आचार्य शिष्यों की परीक्षा हेतु ग्रंथ के किसी भी समस्या को प्रस्तुत कर छात्रों को अपने अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु प्रेरित करते थे।***

3. **साक्षात्कार** - *साक्षात विषय वस्तु और विषय वस्तु की पृष्ठभूमि से संबंधित अवधारणात्मक तथा तथ्यात्मक प्रश्न पूछना ही साक्षात्कार है।*

4. **भाषण** - *परीक्षक छात्रों के समक्ष पूर्व निर्धारित विषय को प्रस्तुत करके उसे संक्षिप्त रूप से बोलने के लिए कहता है। भाषण छात्रों के भाषण कौशल परीक्षण हेतु उपयोगी है।*

5. **अंताक्षरी** - *अंताक्षरी के द्वारा परीक्षण (शब्दान्ताक्षरी एवं श्लोकांताक्षरी)*

लिखित परीक्षा

- इसमें छात्रों के परीक्षण हेतु प्रश्न लिखित रूप में दिए जाते हैं तथा छात्र प्रश्नों के उत्तर भी लिखित रूप में ही देते हैं। **इसका उद्देश्य छात्रों के लेखन कौशल का परीक्षण करना होता है।**

- **लिखित परीक्षा दो प्रकार की होती है -**

1. **वस्तुनिष्ठ**
2. **निबंधात्मक**

लिखित परीक्षा

1. वस्तुनिष्ठ -

इस परीक्षा में निश्चित उत्तर वाले प्रश्नों को समाहित किया जाता है। ***अतः इस परीक्षा को अधिक विश्वसनीय वैध व व्यवहारिक माना गया है।*** *इस परीक्षा में कम समय में छात्रों का परीक्षण किया जा सकता है। विश्वसनीय परिणाम मिलते हैं। ज्ञान को स्थायित्व मिलता है* ***लेकिन - इस तरह के परीक्षण में लेखन शैली, निरीक्षण शक्ति व कल्पना शक्ति का परीक्षण संभव नहीं है।***

वस्तुनिष्ठ के भेद

- अभिज्ञानात्मक
  - बहुविकल्पात्मक प्रश्न
  - एकांतर अनुक्रिया या सत्य-असत्य प्रश्न
  - समानता या मिलान पद
  - वर्गीकरण या विभेदीकरण पद
- प्रत्यास्मरणात्मक
  - रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न
  - सरल प्रत्यास्मरण रूप प्रश्न

लिखित परीक्षा 1) वस्तुनिष्ठ
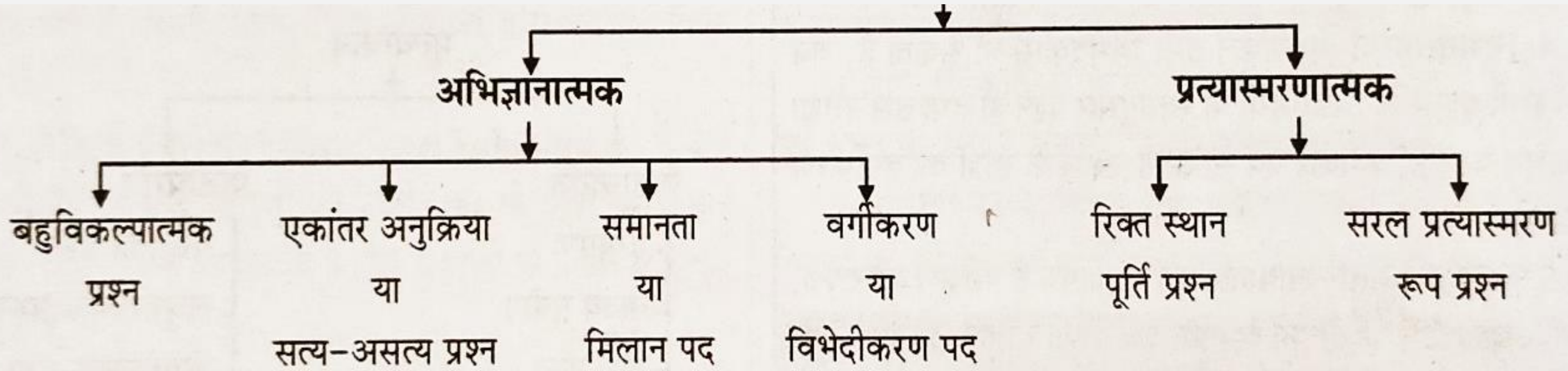
I. **अभिज्ञानात्मक प्रश्न** - अभिज्ञानात्मक प्रश्न में वे प्रश्न सम्मिलित होते हैं जो छात्रों की अभिज्ञान शक्ति (पहचान शक्ति) का परीक्षण करते हैं ।

I. **बहुविकल्पात्मक प्रश्न** - इन प्रश्नों में बहुत विकल्प (सामान्यतः 4 विकल्प) दिये होते हैं जिनमें से सही विकल्प को छात्र द्वारा पहचानना होता है । वर्तमान में सर्वाधिक प्रयुक्त , वैध व विश्वसनीय परीक्षा प्रणाली मानी जाती है ।

II. **सत्य - असत्य रूप प्रश्न** (एकान्तर अनुक्रिया रूप प्रश्न) - इन प्रश्नों में कुछ कथन दिये होते है जिनमें छात्रों को सही कथन के आगे (✓) का निशान तथा गलत कथन के आगे (x) निशान लगाना होता है ।

III. **मिलान पद प्रश्न (समानता पद)** - इसमें प्रश्नों को दो स्तभों में अव्यवस्थित रूप से लिखा जाता है । छात्र सही पदों को मिलाता है ।

➢ वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों / परीक्षाओं के गुण : -

1 . विश्वसनीयता

2 . पूर्वाग्रहों से मुक्ति

3 . वस्तुनिष्ठता

4 . विभेदनशीलता

5 . अंकन में शीघ्रता

6 . परीक्षण में कम समय

7. इस प्रकार के परीक्षणों को बनाने एवं व्यवहार में लाने में व्यापकता पायी जाती हैं ।

➢ वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों के दोष :

1 . इस प्रकार के प्रशिक्षण के निर्माण हेतु विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती हैं ।

2. अनुमान आधारित उत्तर ।

3 . अधिक लागत ।

4 . लिखित अभिव्यक्ति का ह्रास ।

5 . सृजनात्मक चिन्तन , विचार , दृष्टिकोण एवं भाषायी कौशल का परीक्षण करना संभव नहीं ।

लिखित परीक्षा 1) वस्तुनिष्ठ

2. प्रत्यास्मरणात्मक प्रश्न - इनके द्वारा छात्रों की स्मरण शक्ति का परीक्षण किया जाता है । छात्र स्मरण या धारणा के आधार पर उत्तर देता है या अपूर्ण कथन को पूर्ण करता है ।

i. **(क) रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न** - इनमें छात्र दिए गए कथन के रिक्त स्थान को उचित शब्द द्वारा पूर्ण करता है ।

ii. **(ख) सरल प्रत्यास्मरण प्रश्न** - लघु प्रश्न जिसका उत्तर भी संक्षिप्त ही होता है । जैसे- विलोम शब्द लिखिए ।

2. निबंधात्मक परीक्षा

- ***निबन्धात्मक परीक्षा/वर्णनात्मक*** *परीक्षा प्राचीन व परम्परागत परीक्षा प्रणाली है जिसमें प्रश्नों के उत्तर निबंध रूप में दिये जाते हैं ।*
- *इसका* ***प्रमुख उद्देश्य*** *छात्रों के भाषा कौशलों , भाषा शैली , मानसिक या बौद्धिक तर्क चिन्तन व कल्पना शक्ति , भाषायी ज्ञान , लेखन कौशल तथा अभिव्यक्ति कौशल का परीक्षण करना है । यह अधिक वैध व विश्वसनीय नहीं है क्योंकि इसमें जाँचकर्ता के स्वभाव व दृष्टिकोण की प्रधानता होती है ।*
- *प्रश्नों के उत्तर असीमित , अनिश्चित व वर्णनात्मक होते हैं जिनका मूल्यांकन कठिन व अलग अलग रहता है ।*

- ***निबन्धात्मक परीक्षा में प्रश्न प्रकार -***
- ***अतिलघूत्तरात्मक - एक पंक्ति या 2 , 3 शब्दों में उत्तर***
- ***लघूत्तरात्मक - निर्धारित पंक्ति या शब्दों में उत्तर***
- ***निबन्धात्मक - वर्णनात्मक उत्तर विस्तृत उत्तर***

लिखित परीक्षा

➢ निबन्धात्मक परीक्षणों के गुण -

1 . सृजनात्मक चिन्तन , कल्पनाशक्ति , निर्णय शक्ति , स्मरण शक्ति का पता लगाने में सहायक ।

२. व्यक्तिगत विचारों का पता लगाने में सहायक ।

3 . परीक्षण को बनाने में सरलता व कम लागत ।

4 . अध्यापकों हेतु सामान्य प्रशिक्षण की आवश्यकता ।

5. विद्यार्थियों को स्वतंत्र एवं संगठित रूप से विचारों को अभिव्यक्त करने के अवसर

➢ निबन्धात्मक परीक्षा के दोष -

1 . विश्वसनीयता का अभाव -

2 . अंकन में समय अधिक लगता है

3. वैधता का अभाव

4. व्यापकता का अभाव । अर्थात् इस प्रकार के परीक्षणों में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को सम्मिलित नहीं किया जा सकता ।

5 . रटन्त प्रवृत्ति को बल व्यक्तिनिष्ठता (परीक्षण पर प्रश्न का निर्माता के व्यक्तित्व , विचारधारा का प्रभाव)

➢ 3 . प्रायोगिक परीक्षा / क्रियात्मक परीक्षा -

इन परीक्षाओं का प्रयोग छात्रों की दक्षता या कौशल परीक्षण में किया जाता है । इनमें छात्रों को कछ कार्य करने के लिए दिये जाते हैं । इन परीक्षाओं में भी विश्वसनीयता का अभाव रहता है क्योंकि शिक्षकों द्वारा भेदभाव की संभावना रहती है ।

गुणात्मक प्रविधियाँ

- *गुणात्मक परीक्षाएं आंतरिक मूल्यांकन हेतु काम में ली जाती हैं।*

1. जाँच की सूची और स्तर माप
2. अवलोकन या निरीक्षण
3. घटनावृत्त
4. साक्षात्कार

- **जाँच सूची और स्तर माप :-**
  - जाँच सूची का उपयोग छात्र के प्रयोगात्मक ज्ञान, अभिवृत्तियों, रुचियों, अवधारणाओं और मूल्यों आदि के सम्बन्ध में उपलब्धियों का पता लगाने के उद्देश्य से किया जाता है। जबकि स्तर माप के माध्यम से यह जाना जाता है कि किसी छात्र के कुछ विशिष्ट गुणों ने अन्य छात्र एवं शिक्षकों पर क्या प्रभाव डाला है।

- **अवलोकन या निरीक्षण :-**
  - किसी व्यक्ति या समूह के व्यवहार को कुछ निश्चित समय के लिए देखना और उसके व्यवहार के कुछ बिंदुओं को दर्ज करना अवलोकन है। अवलोकन को सही तरीके से दर्ज करने के लिए अवलोकनकर्ता, चैकलिस्ट, अवलोकन चार्ट, मापनी परीक्षण आदि उपकरणों का प्रयोग करता है।

- **घटनावृत्त :-**
    - घटनावृत्त शिक्षार्थियों के जीवन की सार्थक घटना का विवरण या कोई ऐसी घटना जो अवलोकन करने वाले की दृष्टि में शिक्षार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो या शिक्षक के द्वारा अनुभव किया गया विभिन्न परिस्थितियों में शिक्षार्थियों का वास्तविक व्यवहार हो सकता है।

- **साक्षात्कार :-**
    - साक्षात्कार विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में व्यक्तियों से सूचना संकलन का सर्वाधिक प्रचलित साधन है। साक्षात्कार में व्यक्तियों को आमने-सामने बैठाकर विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। उनके आधार पर उनकी योग्यताओं का मूल्यांकन किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने के लिए किए जाने वाले साक्षात्कार को मौखिकी के नाम से जाना जाता है।